वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 303
ISBN 978-93-80353-90-6

भगवान मुनिसुव्रतनाथ विधान

–लेखिका–

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)
श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी के
72वें जन्मदिवस (मगसिर शु. सप्तमी) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.ए फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

तृतीय संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
2200 प्रतियाँ	मगसिर शु. सप्तमी, 9 दिसम्बर 2013	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण-सन् 2008 (1100 प्रतियाँ) द्वितीय संस्करण – सन् 2011 (1100 प्रतियाँ)

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

आद्य वक्तव्य

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनशासन के चौबीस तीर्थंकरों में से बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ हैं जिनका जन्म आज से 12 लाख वर्ष पूर्व राजगृही नगरी में हुआ था। इनके तीर्थकाल में मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र बलभद्र और लक्ष्मण नारायण के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं जिनका जन्म अयोध्या में हुआ तथा इनका जीवन अत्यन्त संघर्षमयी होने से आज भी रामायण के विभिन्न पृष्ठों में पढ़ा जाता है।

सन् 2002 में भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक के प्रसंग में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार की ओर ससंघ मंगल विहार हुआ। उस समय कुण्डलपुर का जीर्णोद्धार एवं विकास तो राष्ट्रीय स्तर पर हुआ ही, उसके साथ निकटवर्ती तीर्थ राजगृही (महावीर की प्रथमदेशना भूमि) एवं पावापुरी (महावीर की निर्वाणभूमि) के भी दर्शनों का सौभाग्य हम सभी को प्राप्त हुआ। उस तीर्थ त्रिवेणी के संगम में लगभग 22 माह का समय हम लोगों के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा, क्योंकि पूज्य माताजी की कृपा प्रसाद से राजगृही और पावापुरी दोनों तीर्थों के दर्शन प्रतिमाह करके उनकी 21-21 वंदना का पुण्यलाभ मिला, जो कि जीवन के अविस्मरणीय क्षणों के रूप में अद्यावधि मानसपटल पर अंकित हैं।

यहाँ एक विशेष ज्ञातव्य विषय यह है कि फरवरी सन् 2003 में जब पूज्य माताजी प्रथम बार राजगृही तीर्थ पर पहुँचीं तो कतिपय तीर्थयात्रियों से राजगृही का परिचय पूछने पर यही ज्ञात हुआ कि यह तो भगवान महावीर की देशनास्थली है किन्तु इससे आगे कोई यह नहीं बता सके कि राजगृही किसी तीर्थंकर की जन्मभूमि भी है, जबकि महावीर की देशना से लाखों वर्ष पूर्व भगवान मुनिसुव्रतनाथ के 4 कल्याणक (गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान) राजगृही में इन्द्रों द्वारा मनाये गये हैं। पूज्य माताजी ने उसके बाद वहाँ 12 फुट उत्तुंग मुनिसुव्रतनाथ की खड्गासन प्रतिमा दिगम्बर जैन लाल मंदिर के प्रांगण में विराजमान करवाई और वहीं पर सन् 2003 में एक दिन बैठकर इस ''भगवान

मुनिसुव्रतनाथ विधान'' की रचना करके सर्वप्रथम वहीं इस विधान पूजन को अपने सानिध्य में करवाया।

इस विधान में 108 अर्घ्य हैं, एक पूर्णार्घ्य और जयमाला है जिसे एक दिन में मात्र 1-2 घंटे में भक्तजन सम्पन्न कर सकते हैं।

भगवान मुनिसुव्रत शनिग्रहनाशक के रूप में भी माने गये हैं। इस विधान को करने से जन्मकुण्डली में दृष्टिगत क्रूर से क्रूर शनिग्रह की बाधा दूर होती है। यदि कभी शनिवार को अमावस तिथि आ जावे, तब विशेषरूप से इस विधान को करने से शनिग्रह से होने वाले संकट समाप्त होते हैं।

विधान के पश्चात् इसी पुस्तक में शनिग्रहअरिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर पूजा दी गई है। इसे आप प्रत्येक शनिवार को करें तथा मुनिसुव्रत भगवान की जन्मभूमि राजगृही तीर्थ की पूजा भी इसमें संलग्न है उसे यदा-कदा करने से परोक्ष में राजगृही तीर्थ यात्रा का पुण्य प्राप्त किया जा सकता है।

शनिग्रहनाशक विशेष मंत्र और यंत्र भी इसमें दिये गये हैं। उन्हें आप प्रयोग करके स्वस्थता, शांति और आर्थिक लाभ की प्राप्ति करें, यही इस पुस्तक के प्रकाशन का सार है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रोहतक, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमाताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

विधान के मण्डल का नक्शा

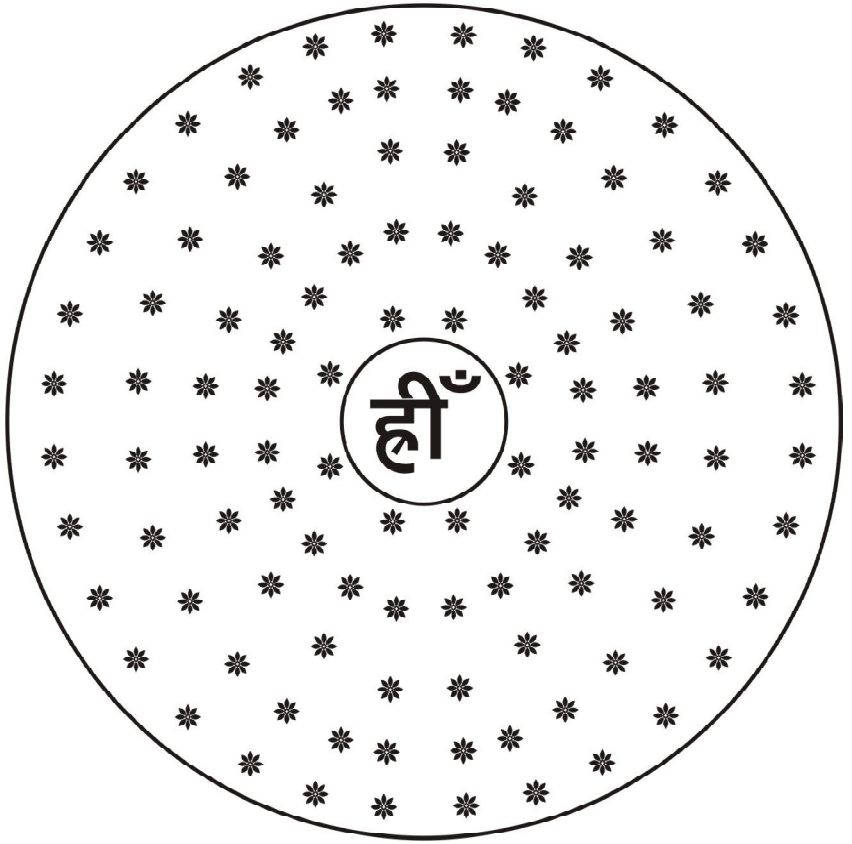

नवदेवता पूजन

—गीता छन्द —

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहां मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक —

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूं मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि ऋद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।नव.।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि ऋद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।नव.।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु, पूजहूँ नत भाल मैं।।नव.।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक, लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।नव.।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।नव.।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनुपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।नव.।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।व.।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।** (९, २७ या १०८बार)

जयमाला

सोरठा- **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकलजंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।२।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।३।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनी पियूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूं।।७।।

दोहा—**नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

—गीता छंद —

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहां पर कभी न आवते।।९।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

वंदना

महाव्रतधरो धीरः, सुव्रतो मुनिसुव्रतः।
नमस्तुभ्यं प्रदद्यान्मे, रत्नत्रयपूर्णताम्।।१।।

—शंभु छंद —

मुनिसुव्रत! सुव्रत के दाता, भव हर्ता मुक्ति विधाता हो।
मैं नमूँ तुम्हें मेरे स्वामी, मुझको भी सिद्धि प्रदाता हो।।
वह राजगृही नगरी धन है, त्रैलोक्य गुरू जहाँ थे जन्में।
हैं धन्य सुमित्र पिता माता, सोमा भी धन्य हुईं जग में।।१।।

श्रावण वदि दूज गर्भ बारस[१], वैशाख वदी में जन्म लहा।
बैशाख वदी दशमी नवमी, क्रम से दीक्षा औ ज्ञान लहा।।
अस्सी कर तुंग शरीर कहा, प्रभु नील वर्ण अतिशय सुन्दर।
थी तीस हजार वर्ष आयु, कच्छप[२] के चिन्ह से जानें नर।।२।।

फाल्गुन वदि बारस को गिरि पर, प्रभु ने सब कर्म विनाशा था।
सुरगण ने आकर के तत्क्षण, शिव हेतु नमाया माथा था।।
भगवन्! मैं वर्ण स्पर्श गंध, औ रस से रहित अरूपी हूँ।
बस तव भक्ती से व्यक्ती हो, मैं एक स्वयं चिद्रूपी हूँ।।३।।

हे देव! तुम्हारी भक्ती का, फल एक यही बस मिल जावे।
प्रतिदिन प्रतिपल अंतिम क्षण तक, तव नाम मंत्र जिह्वा गावे।।
नहिं पीड़ा हो नहिं हों कषाय, बस कंठ अकुंठित बना रहे।
हे नाथ! तुम्हारे चरणों की, भक्ती में ही मन रमा रहे।।४।।

श्री जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

१. कल्याणमाला। २. कछुआ।

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा

—अथ स्थापना (नरेंद्र छंद) —

श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकर के, चरण कमल शिर नाऊँ।
व्रत संयम गुण शील प्राप्त हों, यही भावना भाऊँ।।
मुनिगण महाव्रतों को पाकर, मुक्तिरमा को परणें।
हम भी आह्वानन कर पूजें, पाप नशें इक क्षण में।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथ अष्टक (वसंततिलका छंद) —

सरयू नदी जल भरा कनकाभ झारी।
धारा करूँ त्रय जिनेश्वर पाद में मैं।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर संग घिस चंदन गंध लाया।
पादारविंद प्रभु के चर्चूं अभी मैं।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान धवलाक्षत पुंज धारूँ।
मेरा अखंड पद नाथ! मुझे दिला दो।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब सुरभी करते दशों दिक्।
पादारविंद प्रभु के अर्पण करूँ मैं।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी सुहाल गुझिया बरफी बनाके।
हे नाथ! अर्पण करूँ क्षुध रोग नाशे।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती हरती अंधेरा।
हे नाथ! आरति करूँ निज ज्ञान चमके।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वहा।

खेऊँ सुगंध वर धूप सु अग्नि में मैं।
संपूर्ण कर्म झट भस्म बने न दुःख दें।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार वर द्राक्ष बदाम लेके।
अर्पूं तुम्हें सब मनोरथ पूर्ण कीजे।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ्य भर थाल चढ़ाय देऊँ।
मेरा अनर्घ्य पद नाथ! मुझे दिला दो।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा —

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम राज्य, त्रिभुवन में भी शांति हो।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
मिले सर्व सुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

—रोला छंद —

पिता सुमित्र नरेश, राजगृही के शास्ता।
सोमावती के गर्भ, बसें जगत शिर नाता।।
श्रावण कृष्णा दूज, इन्द्र जजें पितु माँ को।
जजूँ गर्भ कल्याण, मिले आत्मनिधि मुझको।।१।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां श्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, वदि वैशाख दुवादश।
इन्द्र लिया शिशु गोद, पहुँचे पांडुशिला तक।।
एक हजार सुआठ, कलशों से नहलाया।
जजत जन्म कल्याण, पुनि पुनि जन्म नशाया।।२।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण निमित्त, वदि वैशाख सुदशमी।
अपराजिता पालक्कि, नीलबाग में प्रभुजी।।
सिद्धं नमः उचार, स्वयं ग्रही प्रभु दीक्षा।
नमूँ नमूँ शत बार, मिले महाव्रत दीक्षा।।३।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक तरु तल नाथ, वदि वैशाख नवमि के।
केवलज्ञान विकास, समवसरण में तिष्ठे।।
श्रीविहार में चरण तले, प्रभु स्वर्ण कमल थे।
नमूँ नमूँ नतमाथ, ज्ञान कल्याणक रुचि से।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद सुशैल, फाल्गुन वदि बारस में।
किया मृत्यु को दूर, मुक्तिरमा ली क्षण में।।
नमूँ मोक्ष कल्याण, कर्म कलंक नशाऊँ।
मुनिसुव्रत भगवान, चरणों शीश झुकाऊँ।।५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

१०८ मंत्रों से अर्घ्य

—दोहा—

प्रभु अनंतगुण के धनी, मुनिसुव्रत भगवान।
मंत्र एक सौ आठ से, पूजूँ सौख्य निधान।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिः क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं त्रिलोक-त्रिकालवर्तिसर्वद्रव्यपर्यायात्मकवस्तुस्वरूपज्ञायकाय सर्वज्ञनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं सर्वचराचरजगद्वित्ज्ञानप्रदाय सर्वविन्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनावलोकनसमर्थदर्शनप्रापणकराय सर्वदर्शिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यदर्शनसमर्थनेत्रसहिताय सर्वावलोकननामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपथाचरणशक्तिप्रदाय अनवधिपराक्रमसहिताय अनन्त-विक्रमनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलप्रदानसमर्थाय अनन्तवीर्यनामालंकृताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६।।

ॐ ह्रीं अनवधिसुखप्रदाय अनन्तसुखात्मकनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियसुखप्रापणशक्तिप्रदाय अनन्तसौख्यनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८।।

ॐ ह्रीं समस्तविश्वज्ञातृशक्तिप्रदाय विश्वज्ञनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९।।

ॐ ह्रीं अखिलजगदावलोकनसमर्थयुक्तिप्रदाय विश्वदृश्वन्नामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०।।

ॐ ह्रीं समस्तपदार्थावलोकनदृष्टिधारकाय अखिलार्थदृङ्नामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियसाहाय्यमन्तरेण सर्वलोकालोकावलोकनसमर्थाय न्यक्षदृङ्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानदर्शनचक्षुर्भ्यां सर्वविश्वावलोकनसमर्थाय विश्वतश्चक्षुर्नाम-धारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३।।

ॐ ह्रीं सर्वजगदावलोकनदर्शनप्रदाय विश्वचक्षुर्नामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकालोकज्ञायकाय अशेषविन्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियसौख्यसागरनिमग्नाय आनंदनामसमन्विताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६।।

ॐ ह्रीं परमोत्कृष्टसौख्यप्रदानसमर्थाय परमानन्दनामविभूषिताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७।।

ॐ ह्रीं सर्वकालोदयास्तमनविरहितसौख्यमंडिताय सदानन्दनाम-विभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टाभ्युदयप्रदानसमर्थाय सदोदयनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९।।

ॐ ह्रीं शाश्वतसौख्यप्रदायकाय नित्यानन्दनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०।।

ॐ ह्रीं भक्तानां चरणपूजया महानन्दप्रदायकाय महानन्दनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१।।

ॐ ह्रीं भक्तानां चरणपूजया उत्कृष्टानन्दप्रदायकाय परानन्दनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२।।

ॐ ह्रीं परमोत्कृष्टज्ञानोदयप्रदायकाय परोदयनामालंकृताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३।।

ॐ ह्रीं अतिशयकारि-उत्साहप्रदायकाय परमोजनामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टभास्करप्रकाशरूपसमन्विताय परंतेजोनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२५।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टधामप्रापणसमर्थाय परंधामनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२६।।

ॐ ह्रीं परमतेजःस्वरूपसमन्विताय परंमहोनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७।।

ॐ ह्रीं कोटिरविप्रभालज्जितकरणभामंडलविभवप्राप्ताय प्रत्यग्ज्योति-र्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८।।

ॐ ह्रीं लोकालोकलोचनोत्कृष्टनेत्रसमन्विताय परंज्योतिर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९।।

ॐ ह्रीं पंचमज्ञानस्वरूपाय परंब्रह्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०।।

ॐ ह्रीं रहस्यमयात्मतत्त्वोपदेशनकराय परंरहोनामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टबुद्धिप्रदायकाय प्रत्यगात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रदानकरणसमर्थाय प्रबुद्धात्मनामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३३।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहसा लोकालोकव्यापकाय महात्मनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरनामोदयविभूतिसमन्विताय आत्ममहोदयनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३५।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टकेवलज्ञानप्रदायकाय परमात्मनामसमन्विताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३६।।

ॐ ह्रीं घातिकर्मक्षयकरणबुद्धिप्रदाय प्रशान्तात्मनामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोपेताय परात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८।।

ॐ ह्रीं शरीरस्वरूपपरनिवासविरहितात्मगृहनिवासबुद्धिप्रदाय आत्म-निकेतननामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९।।

ॐ ह्रीं इन्द्रधरणेन्द्रनरेन्द्रगणीन्द्रादिवंदितपदस्थिताय परमेष्ठिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४०।।

ॐ ह्रीं अतिशाय्यात्मस्वरूपसमन्विताय अष्टमीभूमिस्थिताय महिष्ठात्म-नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४१।।

ॐ ह्रीं अतिप्रशस्तकेवलज्ञानापेक्षासर्वव्यापकाय श्रेष्ठात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४२।।

ॐ ह्रीं निजशुद्धबुद्धैकस्वरूपात्मस्थिताय स्वात्मनिष्ठितनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमयब्रह्मस्वरूपात्मस्थिताय ब्रह्मनिष्ठनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टयथाख्यातचारित्रस्थिताय महानिष्ठनामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनप्रसिद्धात्मस्वरूपाय निरूढात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६।।

ॐ ह्रीं निश्चलस्वरूपानन्तबलोपेतसत्तामात्रावलोकनसमर्थदृक्समन्विताय दृढात्मदृङ्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७।।

ॐ ह्रीं एकाद्वितीयकेवलज्ञानलक्षणोपलक्षितविद्यासमन्विताय एकविद्य-नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८।।

ॐ ह्रीं महतीकेवलज्ञानविद्याप्रदायकाय महाविद्यनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९।।

ॐ ह्रीं महाब्रह्मरूपमोक्षपदस्वामिने महाब्रह्मपदेश्वरनामप्राप्ताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५०।।

ॐ ह्रीं पंचविधज्ञानप्रदाय पंचपरमेष्ठिगुणविभूषिताय पंचब्रह्ममयनाम-धारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५१।।

ॐ ह्रीं सर्वप्राणिनां हितैषिणे सार्वनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५२।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्यानां स्वामिने सर्वविद्याप्रदाय सर्वविद्येश्वरनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५३।।

ॐ ह्रीं समवसरणलक्षणास्थानप्राप्ताय स्वभूनामविभूषिताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५४।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गे बुद्धिस्थिरीकरणाय अनन्तधीनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५५।।

ॐ ह्रीं अनंतकेवलज्ञानोपलक्षिताय अनन्तात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६।।

ॐ ह्रीं अनन्तशक्तिप्रदाय अनन्तशक्तिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनप्रापणबुद्धिदायकाय अनन्तदृङ्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५८।।

ॐ ह्रीं अनवधिबुद्धि-शक्तिप्रदाय अनन्तानंतधीशक्तिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५९।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानचिज्ज्योतिःप्रदाय अनन्तचिन्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६०।।

ॐ ह्रीं अनवधिसुखकारकाय अनन्तमुद्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६१।।

ॐ ह्रीं अखंडप्रकाशपुंजप्रदायकाय सदाप्रकाशनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६२।।

ॐ ह्रीं सर्वद्रव्यगुणपर्यायप्रत्यक्षकरणशक्तिप्रदाय सर्वार्थसाक्षात्कारि-नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६३।।

ॐ ह्रीं समस्तज्ञेयप्रमाणबुद्धिधारणसमर्थाय समग्रधीनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६४।।

ॐ ह्रीं पुण्यपापरूपकर्मज्ञायकाय कर्मसाक्षिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्थितप्राणिनां लोचनसदृशज्ञायकाय जगत्चक्षुर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६६।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थमुनीनामदृश्यस्वरूपाय अलक्ष्यात्मनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६७।।

ॐ ह्रीं अस्मादृशानां दृढचारित्रप्रदाय निश्चलस्थानप्राप्ताय अचलस्थितिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६८।।

ॐ ह्रीं सर्वबाधाविरहितपदप्रदाय निराबाधनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६९।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थजनचिंतनविरहिताय अप्रतर्क्यात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७०।।

ॐ ह्रीं सहस्रारदेदीप्यमान-जगज्जनसंतापशान्तकरणसमर्थाय धर्मचक्रप्राप्ताय धर्मचक्रिनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७१।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्वज्जनश्रेष्ठपदप्रदाय विदांवरनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७२।।

ॐ ह्रीं लोकालोकस्वरूपज्ञायकाय भूतात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७३।।

ॐ ह्रीं स्वाभाविकज्ञानज्योतिःप्रदाय सहजज्योतिर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७४।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशज्योतिःप्रदाय विश्वज्योतिर्नामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७५।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियमनोविरहितज्ञानप्रदाय अतीन्द्रियनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रापणकराय केवलिनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७७।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानप्रकाशप्रदाय केवलालोकनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७८।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशज्ञानप्रदाय लोकालोकविलोकननामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७९।।

ॐ ह्रीं सर्वविषयेभ्यः पृथग्भूताय विविक्तनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८०।।

ॐ ह्रीं असहायज्ञानप्रदायकाय केवलनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८१।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियमनोऽगोचरपददायकाय अव्यक्तनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८२।।

ॐ ह्रीं अर्तिमथनसमर्थाय सर्वजनशरणप्रदाय शरण्यनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८३।।

ॐ ह्रीं साधारणजनमनोऽगोचरवैभवप्रदाय अचिन्त्यवैभवनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८४।।

ॐ ह्रीं अखिलविश्वजनतापोषणसमर्थाय विश्वभृद्नामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकिरणैस्त्रैलोक्यव्याप्ताय विश्वरूपात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८६।।

ॐ ह्रीं विश्वस्थितप्राणिगणनिजसदृशावलोकनदक्षाय विश्वात्मनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८७।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानेन लोकालोकव्यापकाय विश्वतोमुखनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८८।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रदेशैर्लोकपूरणसमुद्घातकाले विश्वव्यापकाय विश्वव्यापिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८९।।

ॐ ह्रीं आत्मज्योतिःस्वरूपभास्कराय स्वयंज्योतिर्नामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९०।।

ॐ ह्रीं अवाङ्मानसगोचरस्वरूपप्रदाय अचिन्त्यात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९१।।

ॐ ह्रीं कोटिभास्कर-कोटिचन्द्रसमानशरीरतेजःसमन्विताय अमितप्रभ-नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९२।।

ॐ ह्रीं वाञ्छितफलप्रदायकदानशक्तिसमन्विताय महौदार्यनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९३।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयप्राप्तिस्वरूपबोधिप्रदाय महाबोधिनामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९४।।

ॐ ह्रीं नवकेवललब्धिस्वरूपलाभदायकाय महालाभनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरनामकर्मोदयसहिताय महोदयनामसमन्विताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९६।।

ॐ ह्रीं सच्छत्रचामरसिंहासनाशोकतरुप्रमुखमुहुर्भोग्यसमवसरणादि-लक्षणविभवसहिताय महोपभोगनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९७।।

ॐ ह्रीं शोभनबुद्धिकेवलज्ञानस्वरूपाय सुगतिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९८।।

ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टि-पुष्पवृष्टिशीतलमृदुसुगंधवातादिललक्षणभोग्य-वस्तुसमन्विताय महाभोगनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९९।

ॐ ह्रीं समस्तवस्तुपरिच्छेदलक्षणानन्तवीर्यसहिताय महाबलनाम-धारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१००।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिपरिभ्रमणमूलकारणमोहनीयकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तगुणसमुद्रनिमग्नाय सम्यक्त्वनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०१।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय समस्तलोकालोकाव-लोकनसमर्थाय दर्शननामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०२।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय युगपत्समस्तलोका-लोकप्रत्यक्षकरणसमर्थाय ज्ञाननामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०३।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तशक्तिसमन्विताय वीर्यनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०४।।

ॐ ह्रीं नामकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय ज्ञानकिरणैः समस्तसंसारव्याप्ताय सूक्ष्मत्वनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०५।।

ॐ ह्रीं आयुःकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तानन्तसिद्धावगाहनप्रदान-समर्थाय अवगाहननामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०६।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तानन्तकालनिजात्मविश्राम-कारणस्वरूपाय अगुरूलघुनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०७।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय परमातीन्द्रियसौख्यसागरनिमग्नाय अव्याबाधनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०८।।

—पूर्णार्घ्य —

तर्ज-हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....

हे नाथ! तुम्हारी पूजा को, हम थाल सजाकर लाये हैं।
हे सुव्रतदाता मुनिसुव्रत! हम चरण शरण में आये हैं।।
शनिग्रह की बाधा दूर करो, यद्यपि यह ख्याति जगत में है।
फिर भी सब ग्रह बाधा विनशें, ऐसा यश सुन हम आये हैं।।१।।
हे नाथ!.....।
संपूर्ण अमंगल, रोग, शोक, दारिद्रादिक दुःख दूर भगें।
अपमृत्यु टले सुसमाधि मिले, यह आशा लेकर आये हैं।।२।।
हे नाथ!.....।

संसार विपिन में जन्म मरण, करते करते हम श्रांत हुए।
परमानन्दामृत सुख की बस, अभिलाषा लेकर आये हैं।।३।।
हे नाथ!.....।

ॐ ह्रीं सर्वडाकिनी शाकिनी भूतपिशाचव्यन्तरदेवादिकृतोपद्रवविनाशन-समर्थाय सर्वज्ञादिअव्याबाधगुणपर्यन्तअष्टोत्तरशतनामसमन्विताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।।१०९।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य —**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वरुणयक्ष-बहुरूपिणीयक्षीसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः।**

अथवा —**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

(१०८ बार पीले पुष्प या लवंग से जाप्य करें)

जयमाला

सोरठा — **श्रीमुनिसुव्रत देव, अखिल अमंगल को हरें।**
नित्य करूँ मैं सेव, मेरे कर्मांजन हरें।।१।।

—सखी छंद —

जय जय जिनदेव हमारे, जय जय भविजन बहुतारे।
जय समवसरण के देवा, शत इन्द्र करें तुम सेवा।।२।।
जय मल्लि प्रमुख गणधरजी, सब अठरह गणधर गुरु जी।
जय तीस हजार मुनीश्वर, रत्नत्रय भूषित ऋषिवर।।३।।
जय गणिनी सुपुष्पदंता, पच्चास सहस संयतिका।
श्रावक इक लाख वहाँ पर, त्रय लाख श्राविका शुभ कर।।४।।
तनु अस्सी हाथ कहाओ, प्रभु तीस सहस वर्षायू।
कच्छप है चिह्न प्रभू का, तनु नीलवर्ण सुंदर था।।५।।
मुनिवृंद तुम्हें चित धारें, भविवृंद सुयश विस्तारें।
सुरनर किन्नर गुण गावें, किन्नरियाँ बीन बजावें।।६।।

भक्तीवश नृत्य करे हैं, गुण गाकर पाप हरे हैं।
विद्याधर गण बहु आवें, दर्शन कर पुण्य कमावें।।७।।
भव भव के त्रास मिटावें, यम का अस्तित्व हटावें।
जो जिनगुण में मन पागें, तिन देख मोहरिपु भागें।।८।।
जो प्रभु की पूज रचावें, इस जग में पूजा पावें।
जो प्रभु का ध्यान धरे हैं, उनका सब ध्यान करे हैं।।९।।
जो करते भक्ति तुम्हारी, वे भव भव में सुखियारी।
इस हेतु प्रभो! तुम पासे, मन के उद्गार निकासे।।१०।।
जब तक मुझ मुक्ति न होवे, तब तक सम्यक्त्व न खोवे।
तब तक जिनगुण उच्चारूँ, तब तक मैं संयम धारूँ।।११।।
तब तक हो श्रेष्ठ समाधी, नाशे जन्मादिक व्याधी।
तब तक रत्नत्रय पाऊँ, तब तक जिन ध्यान लगाऊँ।।१२।।
तब तक तुमही मुझ स्वामी, भव भव में हो निष्कामी।
ये भाव हमारे पूरो, मुझ मोह शत्रु को चूरो।।१३।।

—घत्ता —

जय जय तीर्थंकर, विश्व हितंकर, जय जय जिनवर वृष चक्री।
जय ''ज्ञानमती'' धर, शिव लक्ष्मीवर, भविजन पावें सिद्धश्री।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—गीता छंद —

जो भव्य 'मुनिसुव्रतविधान', करें सदा अति चाव से।
वे शीघ्र ही संसार सागर, तिरें भक्ती नाव से।।
संसार के सब सौख्य पाकर, स्वात्मसंपति पावते।
'सज्ज्ञानमति' परमात्मपद, पाकर यहाँ नहिं आवते।।१।।

।। इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–आरति करूँ चौबीस जिनेश्वर.....

आरति करूँ मुनिसुव्रत जिन की, आरति करूँ प्रभु जी ।टेक.।।

पहली आरति गर्भकल्याणक–२
पन्द्रह मास रतनवृष्टी की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।१।।

दूजी आरति जन्मोत्सव की–२
मेरू सुदर्शन पर अभिषव की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।२।।

तीजी है निष्क्रमण दिवस की–२
लौकांतिक सुर अनुमोदन की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।३।।

चौथी आरति केवलि प्रभु की–२
द्वादशगणयुत समवसरण की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।४।।

पंचम आरति पंचम गति की–२
मोक्ष धाम संयुत जिनवर की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।५।।

पंचकल्याणकपति प्रभु तुम हो–२
नाश किया संसार भ्रमण को, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।६।।

आरति से भव आरत छुटता–२
"चंदनामति" करे वन्दन प्रभु का, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।७।।

शनिग्रहारिष्ट निवारक
श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना–गीता छंद

मुनिसुव्रतेश जिनेन्द्र की, हम सब करें आराधना।
शनिग्रह अरिष्ट विनाश हेतू, भक्ति से हो साधना।।
शनिवार को प्रभु निकट में, विधिवत् करें यदि अर्चना।
तो सत्य ही दुख दूर होकर, पूर्ण होगी प्रार्थना।।१।।

—दोहा—

पूजा के प्रारंभ में, आह्वानन इत्यादि।
स्थापन सन्निधिकरण, की विधि कही अनादि।।२।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक–सोरठा

जल ले अमल सुस्वादु, धार करूँ जिनपदकमल।
शनिग्रह शान्ती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर लेय, चर्चूं श्री जिनपदकमल।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।२।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल अखण्ड, अर्पूं जिनवर पद निकट।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।३।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला कुंद गुलाब, पुष्प चढ़ाऊँ प्रभु चरण।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।४।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू मोतीचूर, अर्पूं थाल भराय के।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।५।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक की ज्योति, मोहतिमिर को क्षय करे।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।६।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर की धूप, खेऊँ मैं जिनवर निकट।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।७।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ले मधुर रसाल, अर्पूं शिवफल प्राप्त हो।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।८।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि अर्घ्य बनाय चरण चढ़ाऊँ चंदना।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।९।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— **त्रयरोगों की शांति हित, धारा तीन करंत।**
तीन रत्न यदि प्राप्त हों, भवदधि शीघ्र तरंत।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, सुरभित पुष्प मंगाय।
जिनगुणसुरभि मिले मुझे, जिनवर चरण चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अब मण्डल के ऊपर शनिग्रह के स्थान पर श्रीफल सहित अर्घ्य चढ़ावें)

तर्ज-हे वीर तुम्हारे.....

भगवान् तुम्हारी भक्ती से, भव के बन्धन खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।
इस ग्रह के कारण हे स्वामी!, तन धन की हानि सही मैंने।
सहने में हो असमर्थ नाथ, अब तुमसे व्यथा कही मैंने।।
यह सुना बहुत तुम चिन्तन से, अवरुद्ध मार्ग खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।१।।

नवग्रह में सबसे क्रूर शनी, इसको कर शान्त सुखी कीजे।
निजनाममंत्र की एक मणी, स्वामी अब मुझको दे दीजे।।
''चन्दनामती'' इस युक्ती से, शिव के पथ भी खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः!

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-हम लाए हैं तूफान से.....

हम आए हैं प्रभु पास में, पूजा रचाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।टेक.।।

केवल जनम मरण में ही, पर्याय बिताई।
कुछ पुण्ययोग से ही, त्रसपर्याय अब पाई।।
शक्ती मिले चिन्तन करें, आतम जगाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।१।।

स्वर्गों के सुख भोगे पशू की, योनि भी पाई।
नरकों में रो रोकर वहाँ की, आयु बिताई।।
नरतन प्रभो सार्थक करूँ, निज शान्ति पाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।२।।

सम्यक्त्व की महिमा से, आतम शुद्ध बनाऊँ।
शुभ देव शास्त्रगुरु के प्रति, कर्तव्य निभाऊँ।।
फिर''चन्दनामती''क्रम से, स्वर्ग मोक्ष पाने को।
जयमाल के माध्यम से, निजव्यथा सुनाने को।।३।।

शनिग्रह से मेरी मानसिक, व्यथाएँ बढ़ी हैं।
परिवार में कलह व कष्ट, की ये घड़ी है।।
बस इसलिए तुमसे कहा, संकट मिटाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।४।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अष्टक-सोरठा

स्वर्गमोक्षदातार, तीर्थंकर की भक्ति है।
सिद्ध सौख्यसाकार, करती आतमशक्ति है।।

।। इत्याशीर्वादः।।

शनिग्रहारिष्ट निवारक मंत्र

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय वरुणयक्ष-बहुरूपिणीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह! मम (.....) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (२३००० जाप्य)

२. ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

३. ॐ ह्रीं क्रौं ह्रः श्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः। (२३००० जाप्य)

शनिग्रहारिष्ट निवारक यंत्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९
७	८	९	१	२	३	४	५	६
४	५	६	७	८	९	१	२	३
२	३	१	५	६	४	८	९	७
८	९	७	२	३	१	५	६	४
५	६	४	८	९	७	२	३	१
३	१	२	६	४	५	९	७	८
९	७	८	३	१	२	६	४	५
६	४	५	९	७	८	३	१	२

भगवान मुनिसुव्रतनाथ जन्मभूमि
राजगृही तीर्थ पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा.....

मुनिसुव्रत जन्मस्थली, राजगृही धाम है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।टेक.।।

जिस भूमि को ग्यारह लाख वर्षों, पहले ही यह सौभाग्य मिला।
सोमावती माता के महल में, पूरब दिशा का सूरज खिला।।
सूर्य चमकता है, तीर्थ महकता है, राजगृही के शुभ नाम से।
तीरथ की कीरत अमर, होती है प्रभु नाम से।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।१।।

सबसे प्रथम पूजन में करूँ, आह्वानन व स्थापना तीर्थ की।
सन्निधिकरण से अर्चन करूँ, शुद्धातम की आराधना हेतु ही।
मन में बसा लूँ मैं, प्रभु को बिठा लूँ मैं, हो जाएगा पावन मन मेरा।
तीरथ अरु तीर्थंकरों की, पूजन का फल मान्य है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक

तर्ज-जैनधर्म के हीरे मोती.....

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु की, जन्मभूमि है राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।
क्षीरोदधि का जल लेकर, जलधारा कर लूँ भक्ति से।
जन्मजरामृत्यू का क्षय हो, प्रगटे आतम शक्ति है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्य मही।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर, जिनवर पद में चर्चन कर लूँ।
भवआतप हो जाय नष्ट, इस हेतु तीर्थ अर्चन कर लूँ।।इसी.।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंजों में ही, गजमोती की कल्पना करूँ।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।। इसी.।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदि पुष्प में ही, मैं दिव्य पुष्प कल्पना करूँ।
कामबाण के नाश हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।। इसी.।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के भोजन की, कल्पना करूँ नैवेद्य बना।
पूजन में वह अर्पण कर, क्षुधरोग विनाशन हो अपना।।इसी.।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ही रत्नों के, दीपक की कल्पना किया।
मोह नाश हेतू आरति कर, तीरथ की अर्चना किया।। इसी.।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप जलाई अग्नी में।
कर्म भस्म करने हेतू, तीरथ की पूजा करनी है।। इसी.।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे सुस्वादू फल मैंने, जाने कितने खाये हैं।
शिवफल हेतू अब पूजन में, उन्हें चढ़ाने आये हैं।। इसी.।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे भगवन् ! आठों द्रव्यों को, मिला अर्घ्य अर्पण कर लूँ।
पद अनर्घ्य के हेतु ''चन्दनामती'' तीर्थ अर्चन कर लूँ। इसी.।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**गंग नदी की धार का, प्रासुक जल भर लाय।**
शांतिधारा मैं करूँ, निज पर को सुखदाय।।

शान्तये शांतिधारा

राजगृही उद्यान के, विविध पुष्प मंगवाय।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जीवन हो सुखदाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि चतुर्दशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (रोला छन्द)

श्रावण कृष्णा दूज, राजगृही नगरी में।
सोमावति के गर्भ, आये त्रिभुवनपति हैं।।

मैं भी अर्घ्य चढ़ाय, उस नगरी को पूजूँ।
पाऊँ पद सुखदाय, भवबंधन से छूटूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि वैशाख सुमास, की द्वादशि तिथि आई।
मुनिसुव्रत भगवान, जन्मे खुशियाँ छाईं।।
जन्मकल्याण पवित्र, उस नगरी को अर्चन।
कर हो पावन चित्त, राजगृही का वंदन।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मकल्याणक पवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि वैशाख, को दीक्षा जहाँ धारी।
जातिस्मृति से नाथ, ने सम्पत्ति बिसारी।।
नीलबाग से प्रसिद्ध, था राजगृहि उपवन।
पूजूँ उसको नित्य, खिल जावे मन उपवन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमी वदि वैशाख, चंपक तरुतल तिष्ठे।
केवलज्ञान प्रकाश, पाया मुनिसुव्रत ने।।
राजगृही उद्यान, समवसरण से पावन।
पूजूँ जिनवर थान, हो मेरा मन पावन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (रोला छंद)

मुनिसुव्रत भगवान, के चारों कल्याणक।
हुए राजगृह माँहि, अतः धरा वह पावन।।

ले पूर्णार्घ्य सुथाल, श्रद्धा सहित चढ़ाऊँ।
मन का मैल उतार, तीरथ का फल पाऊँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं राजगृहीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

—शेरछन्द —

हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।टेक.।।
यूँ तो जगत में जन्मते हैं प्राणि अनन्ते।
मरते हैं प्रतिक्षण भी यहाँ प्राणि अनन्ते।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१।।
एकेन्द्रि से पंचेन्द्रि तक जो जीव आतमा।
उन सबमें छिपा शक्ति से भगवान आतमा।। हे नाथ.।।२।।
भगवान आतमा प्रगट पुरुषार्थ से होता।
पुरुषार्थ बिना मात्र जग में खाना है गोता।। हे नाथ.।।३।।
तीर्थंकरों का सिद्धपद निश्चित है यद्यपी।
फिर भी तपस्या करके वे पाते हैं शिवगती।।हे नाथ.।।४।।
मैंने भी मनुष जन्म जो पाया अमोल है।
वह मोक्षमार्ग के लिए सचमुच ही मूल है।।हे नाथ.।।५।।
इस काल में निर्वाणपद की प्राप्ति नहीं है।
पर जन्म सार्थ करने की युक्ति यहीं है।।हे नाथ.।।६।।
पुरुषार्थ के द्वारा प्रथम तो कार्य शुभ करें।
जीवन में सदाचार से सारे अशुभ टलें।।हे नाथ.।।७।।

प्रभु जन्मभूमि अर्चन का अर्थ है यही।
आत्मा में रागद्वेष अल्प होवें शीघ्र ही।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।८।।
इस राजगृही में जनम मुनिसुव्रतेश का।
प्रभु वीर की खिरी यहीं पे प्रथम देशना।।हे नाथ.।।९।।
है पंच पहाड़ी में एक विपुलाचल गिरी।
जिस पर बनी रचना है प्रभू गंधकुटी की।।हे नाथ.।।१०।।
गणधर सुधर्मा ने यहीं से सिद्धपद लिया।
कुछ मुनि के सिद्धपद से सिद्धक्षेत्र यह हुआ।।हे नाथ.।।११।।
जिननाथ मुनिसुव्रतेश की बड़ी प्रतिमा।
श्री ज्ञानमती मात प्रेरणा की है महिमा।।हे नाथ.।।१२।।
जयमाल में यह अर्घ्य थाल मैं सजा लाया।
अर्पण करूँ अनर्घ्यपद की प्राप्त हो छाया।। हे नाथ.।।१३।।
भगवान श्री जिनेन्द्र से विनती यही मेरी।
मिट जावे ''चन्दनामती'' संसार की फेरी।।हे नाथ.।।१४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—गीता छन्द —

जो भव्यप्राणी मुनिसुव्रत की जन्मभूमी को नमें।
तीर्थेश प्रभु की चरणरज से शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में ''चन्दना'' वे आएंगे।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।